संगीत (कंठ्य संगीत) के विषय में Ph.D. की उपाधि हेतु संक्षेपिका

**Summary on**

"उत्तर हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के अप्रकाशित, अप्रचलित और नवनिर्मित औडव-औडव, औडव-षाडव तथा षाडव-षाडव जाति के रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन"

"Uttar Hindustani Sangeet Paddhati ke Aprakashit, Aprachalit aur Navanirmit Audav-Audav, Audav-Shadav Tatha Shadav-Shadav Jati ke Ragon ka Vishleshanatmak Adhyayan"


**शोधार्थी**

प्रविण काशीनाथ आहिरे

रजिस्ट्रेशन नं. FOPA/61

रजिस्ट्रेशन दि. 08/02/2017

**मार्गदर्शक**

डॉ. अश्विनीकुमार सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर

डिपार्टमेन्ट ऑफ़ इन्डियन क्लासिकल म्यूज़िक-वोकल

फेकल्टी ऑफ़ परफोर्मिंग आर्ट्स

दि महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटी ऑफ़ बरोड़ा, वड़ोदरा.

## Summary on

"उत्तर हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के अप्रकाशित, अप्रचलित और नवनिर्मित औडव-औडव, औडव-षाडव तथा षाडव-षाडव जाति के रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन"

### प्रस्तावना (Preface)

संगीत के इतिहास की ओर दृष्टि की जाय तो यह पता चलता है की ग्रन्थकारों ने कालानुसार समय-समय पर रागों का वर्गीकरण अपने अनुसार किया है तथा इनके समय में प्रचलित, अप्रचलित तथा नवनिर्मित रागों की चर्चा भी की है | समय-समय पर कालानुसार आमिर खुसरो, पंडित पुंडरिक विट्ठल, तानसेन, उस्ताद आमिर खाँ, पंडित रविशंकर, कुमार गान्धर्व इत्यादि अनेक संगीत-विद्वानों, गायक-वादकों द्वारा नए रागों की निर्मिती भी होती रही है |

संगीत अनंत महासागर की तरह है, कितने ही अप्रचलित अछोप राग सिर्फ ग्रन्थों तक ही सिमित है | ग्रन्थों में दिया गया राग वैभव यदि व्यवहार में गाने-बजाने हेतु नहीं आते हैं तब ऐसे राग धीरे-धीरे लुप्त हो जाएँगे | ऐसे अप्रचलित रागों को संगीत जिज्ञासु, श्रोताओं के समक्ष प्रचार-प्रसार करने हेतु; तथा कुछ अप्रकाशित; कुछ नए राग यदि शास्त्रोक्त विवरण एवं उपलब्ध बंदिश के साथ ग्रंथस्त होकर संगीत जगत, संगीत जिज्ञासु और आशास्पद युवा कलाकारों एवं श्रोताओं के सामने आते हैं, तो भारतीय संगीत में अपने आप नए रागों की प्रति रूचि पैदा होगी और प्रचलित राग गाने के साथ-साथ अप्रचलित, अप्रकाशित तथा नवीन रागों की तैयारी करने के लिए प्रेरित होंगे |

प्रचलित राग गायन गलत नहीं है, परन्तु पर्याप्त भी नहीं है | जीवन का दूसरा नाम सर्जनशीलता है | सभी क्षेत्रों में आज उत्कृष्ट तकनिकी और वैज्ञानिक संशोधन दिन-प्रतिदिन होते रहे हैं, तो संगीत में भी संशोधन और सर्जन संगीत जगत, संगीत जिज्ञासु के हित में होना चाहिए , जिससे आने वाली पीढ़ी को एक नया आयाम करने का अवसर प्राप्त हो |

इस शोध-प्रबंध में कुछ  वाग्येकार, विद्वान तथा गायक-वादकों द्वारा रचे हुए  उत्तर हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति  के अप्रकाशित, अप्रचलित और नवनिर्मित औडव-औडव, औडव-षाडव तथा षाडव-षाडव जाति के रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन द्वारा संकलन करके ग्रंथस्त रूप में शोध-प्रबंध प्रस्तुत करने का नम्र प्रयास शोधार्थी द्वारा किया गया है |

प्रस्तुत शोध-प्रबंध से शोधार्थी के  ज्ञान में  वर्धन तो हुवा ही है परन्तु आगे भी विद्यार्थी, श्रोता एवं आनेवाली सांगीतिक नयी पीढ़ी के लिए  अवश्य लाभ-रूप सिद्ध होगा |

**प्रस्तुत शोध प्रबंध के अध्याय (Chapterisation)**

इस शोध प्रबंध को  कुल चार  अध्यायों में विभक्त किया है एवं पाँचवा अध्याय उपसंहार के रूप में प्रस्तुत किया गया है |

**प्रथम अध्याय : भारतीय संगीत का इतिहास**

इस अध्याय के अन्तर्गत संगीत की व्याख्या देते हुए संगीत के उद्भव को देखते हुए अन्धकार युग, पाषाण काल, ताम्र काल, लौह काल, सिन्धु घाटी इत्यादि में संगीत के विकासक्रम को देखते हुवे वैदिक काल, ब्राह्मण काल में संगीत की ओर दृष्टि करते हुए नारदीयशिक्षा में स्वरों का उद्भव स्थान तथा नामकरण, ग्रामराग तथा उनका विकास क्रम इत्यादि पर प्रकाश डाला गया है | आगे भरतमुनिकृत नाट्यशास्त्र के अन्तर्गत स्वर, ग्राम, सारणा, जाति, जाति गायन, भरतकालीन गीतियाँ, धृवा गीत इत्यादि पर प्रकाश डाला गया हैं | आगे मतंग कृत वृहद्देशीय के अंतर्गत किन्नरी वीणा, मूर्च्छना, मतंग की जातियाँ, जाति गायन के स्थान पर राग शब्द का सर्व प्रथम उल्लेख, गीति इत्यादि के संबंध में वर्णन किया गया है | आगे संगीत रत्नाकर के अंतर्गत दस विध राग लक्षण इत्यादि की चर्चा की गई हैं | इस पश्चात पंडित लोचन कृत राग तरंगिणी के अंतर्गत निबद्ध अनिबद्ध गान, श्रुति, स्वर, थाट, राग गायन समय, औडव, षाडव, सम्पूर्ण जाति इत्यादि विषय पर चर्चा की गई हैं | आगे चलकर राग वर्गीकरण की परंपरा को प्राचीनकाल, मध्यकाल तथा आधुनिक काल में बाँटा गया है | प्राचीन काल में जाति, मध्य काल में शुद्ध, छायालग और संकीर्ण राग वर्गीकरण, राग-रागिनी वर्गीकरण तथा मेल राग वर्गीकरण इत्यादि पर चर्चा की गई है | आधुनिक काल में रागांग पद्धति तथा थाट-राग वर्गीकरण इत्यादि की चर्चा करते हुए रागों की जातियाँ की

चर्चा की गई है | आगे प्रचलित,अप्रकाशित तथा अप्रचलित राग एवं नव निर्मित रागों की व्याख्या स्वरुप चर्चा की गई है |

**द्वितीय अध्याय : उत्तर हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के अप्रकाशित, अप्रचलित और नवनिर्मित औडव-औडव जाति के राग**

इस अध्याय के अंतर्गत उत्तर भारतीय संगीत पद्धति के अप्रकाशित, अप्रचलित और नवनिर्मित औडव-औडव जाति के रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करके उनका शास्त्रोक्त विवरण के साथ संकलन तथा उनका परिचय एवं उपलब्ध बंदिशें दी गई है |

**तृतीय अध्याय : उत्तर हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के अप्रकाशित, अप्रचलित और नवनिर्मित औडव-षाडव जाति के राग**

इस अध्याय के अंतर्गत उत्तर भारतीय संगीत पद्धति के अप्रकाशित, अप्रचलित और नवनिर्मित औडव-षाडव जाति के रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करके उनका शास्त्रोक्त विवरण के साथ संकलन तथा उनका परिचय एवं उपलब्ध बंदिशें दी गई है |

**चतुर्थ अध्याय : उत्तर हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के अप्रकाशित, अप्रचलित और नवनिर्मित षाडव-षाडव जाति के राग**

इस अध्याय के अंतर्गत उत्तर भारतीय संगीत पद्धति के अप्रकाशित, अप्रचलित और नवनिर्मित षाडव-षाडव जाति के रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करके उनका शास्त्रोक्त विवरण के साथ संकलन तथा उनका परिचय एवं उपलब्ध बंदिशें दी गई है |

**पंचम अध्याय : उपसंहार (Conclusion) :** इस अध्याय में "उत्तर हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के अप्रकाशित, अप्रचलित और नवनिर्मित औडव-औडव, औडव-षाडव तथा षाडव-षाडव जाति के रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन" के दौरान जो सबंधित तथ्य उभरकर सामने आये हैं उनका विवेचनात्मक अभ्यास करके योग्य ढंग से संकलन किया गया है | जो भविष्य की आने वाली पीढ़ी के लिए अतिशय मार्गदर्शक और लाभदायक होगा |

प्रथम अध्याय के अन्तर्गत संगीत की व्याख्या के साथ संगीत के उद्भव के विषय में अनेक विद्वानों के मंतव्य का अभ्यास करके अन्धकार युग के अन्तर्गत पूर्व पाषाण काल का अभ्यास करते हुए यह तथ्य सामने आये की भाषा का ज्ञान तो नहीं था परन्तु 'हूँ हूँ हेवा

हूँ हूँ हेवा' जैसी विचित्र प्रकार की सांगीतिक ध्वनि यह निकालते थे | उत्तर पाषाण काल के अभ्यास द्वारा यह तथ्य सामने आये की इस युग में सामूहिक संगीत का जन्म हो चूका था तथा संगीत ने इस काल के लोगों को सभ्यता की ओर झुकाया | ताम्र काल में संगीत की स्थिति इतनी परिपक्व हो गई थी की आने वाले युग के लोगों ने भी इसका लाभ उठाया, इस युग में संगीत को धार्मिक रूप दिया गया | लोह काल में इस युग के लोग विवाह उत्सव गा-बजाकर करते थे | आगे सिन्धु घाटी की सभ्यता और संगीत के विषय का अभ्यास के दौरान यह तथ्य सामने आये की सिन्ध प्रदेश के लरकाना जिले में मोहनजोदड़ो नामक स्थान पर खुदाई में प्राचीनतम शिवजी की तांडव नृत्य करती हुई मूर्ति प्राप्त हुई है; इससे यह पता चलता है की इस काल में संगीत कितना उन्नत अवस्था में था | आगे वैदिक युग के अन्तर्गत स्वर (यम) की संख्या, सामवेद में स्वरों का स्वरुप इत्यादि के अभ्यास से यह पता चलता है की सामगान में पहले केवल तीन से चार स्वर होते थे, बाद में धीरे-धीरे स्वरों की संख्या बढ़कर इन में सातों स्वरों का प्रयोग होने लगा | यह भी पता चलता है की सामवेद के स्वरों का स्वरुप अवरोहात्मक था | तथा सामगान का ग्राम " म ग रे सा नि़ ध़ प़" इस प्रकार अवरोहात्मक क्रम से था, जो मध्यम स्वर से प्रारंभ होता था | आगे नारदीयशिक्षा के अन्तर्गत स्वरों का उद्भव स्थान, तारता, राग तथा ग्रामराग का अर्थ, ग्रामराग का नामकरण तथा विकास क्रम इत्यादि का वर्णन किया है | आगे नाट्यशास्त्र के अन्तर्गत स्वर, ग्राम, मूर्च्छना, सारणा, जाति, जाति गायन, गितियाँ, ध्रुवा गीत इत्यादि की चर्चा की गई है | आगे मतंग कृत 'वृहदेशीय' के अन्तर्गत मतंग को धातु की वंशी का किन्नरी वीणा का अविष्कारक माना है | वीणा के तार पर परदे लगाने का काम सर्व प्रथम मतंग ने किया | मतंग ने ग्राम और मूर्छना शब्द की विस्तृत परिभाषा की है | जाति गायन के स्थान पर 'राग' शब्द का प्रयोग सर्व प्रथम इस ग्रन्थ में हुवा है | भरत के काल के जातिगायन का विकास होकर मतंग के समय में राग गायन के रूप में प्रचलित हो गया था | मतंग ने सात गितियों के अन्तर्गत ग्राम रागों को बाँटा है | इस के बाद संगीत रत्नाकर के दस विध राग लक्षण की चर्चा की गई है | तत्पश्चात मुसलामानों के काल का सर्व प्रथम ग्रन्थ राग तरंगिणी के अभ्यास से यह प्रतीत होता है की लोचन ने राग-रागिनी पद्धति के स्थान पर थाट-राग पद्धति को अपनाकर थाट राग पद्धति का बीजारोपण किया गया है | इस ग्रन्थ में निबद्ध तथा अनिबद्ध गान ऐसे गान के दो भेद बताये गए है | लोचन का शुद्ध थाट; वर्त्तमान काफी थाट के समान है | इस ग्रन्थ में रागों के गायन समय तथा औडव, षाडव तथा सम्पूर्ण जाति के रागों का वर्णन भी किया गया है | आगे, चली आ रही

राग वर्गीकरण पद्धतिको तीन काल में बाँटा है १) प्राचीन काल २) मध्य काल ३) आधुनिक काल | प्राचीन काल के ग्रन्थकारों में भरत, मतंग तथा नारद महत्त्व के ग्रंथकार है | मतंग के समय में ही राग गायन का प्रचलन शुरू हो गया था | नारद कृत 'संगीत मकरंद' में षड्ज ग्राम, मध्यम ग्राम तथा गंधार ग्राम यह तीनो ग्रामों का वर्णन मिलता है; इस ग्रन्थ में षड्ज ग्राम तथा मध्यम ग्राम को भूलोक में प्रचलित बताकर गंधार ग्राम को स्वर्ग लोक का बताया है | स्त्री, पुरुष तथा नापुशंक रागों की चर्चा सर्व प्रथम इस ग्रन्थ में की गई है | औडव, षाडव तथा सम्पूर्ण जाति के कुछ रागों के नाम तथा ग्रह स्वर भी बताये हैं | मध्यकाल में शुद्ध, छायालग और संकीर्ण राग वर्गीकरण एवं राग-रागिनी वर्गीकरण की चर्चा की है; जिसके अन्तर्गत शिवमत, हनुमन्त, रागार्णव मत, कृष्ण मत तथा भरत मत मुख्य है | आगे मेल राग वर्गीकरण की चर्चा के पश्चात आधुनिक काल के अन्तर्गत रागांग पद्धति, थाट राग वर्गीकरण की चर्चा के बाद 'राग' रागों की जातियाँ इत्यादि के विषय में चर्चा के बाद प्रचलित राग, अप्रकाशित तथा अप्रचलित राग तथा नवनिर्मित राग इत्यादि की व्याख्या स्वरुप चर्चा की है |

द्वितीय अध्याय के अन्तर्गत औडव-औडव जाति के रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन के दौरान जो कुछ तथ्य स्वरुप अप्रकाशित, अप्रचलित और नवनिर्मित राग सामने आये हैं उनका शास्त्रोक्त विवरण अंकित करके उपलब्ध बंदिशें दी गई है |

तृतीय अध्याय के अन्तर्गत औडव-षाडव जाति के रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन के दौरान जो कुछ तथ्य स्वरुप अप्रकाशित, अप्रचलित और नवनिर्मित राग सामने आये हैं उनका शास्त्रोक्त विवरण अंकित करके उपलब्ध बंदिशें दी गई है |

चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत षाडव-षाडव जाति के रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन के दौरान जो कुछ तथ्य स्वरुप अप्रकाशित, अप्रचलित और नवनिर्मित राग सामने आये हैं उनका शास्त्रोक्त विवरण अंकित करके उपलब्ध बंदिशें दी गई है |

इस शोधकार्य द्वारा निश्चितरूप से शोधार्थी के ज्ञान में तो संवर्धन हुआ ही है | परन्तु इस शोधकार्य के अभ्यास के दरम्यान जो चिंतन-मनन-मंथन, विचार-विमर्ष, विश्लेषण, तुलनात्मक चर्चा इत्यादि द्वारा जो फलस्वरूप तथ्य उभरकर सामने आये हैं, इन से आनेवाली नयी पीढ़ी, संगीत जिज्ञासु तथा संगीत के विद्यार्थियों को अवश्य लाभ होगा |